“भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश” निर्माण हेतु आयोजित द्विदिवसीय भारतीय ज्ञान मंथन कार्यशाला

प्रथम दिवस : 30 मई 2026

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज द्वारा “भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश” के निर्माण के उद्देश्य से 30 एवं 31 मई 2026 को द्विदिवसीय *भारतीय ज्ञान मंथन कार्यशाला* का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. के. बी. पाण्डेय ने की। इस अवसर पर जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार) के पूर्व कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विधि विभाग के प्रो. आदेश कुमार, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एनसीजेडसीसी), प्रयागराज की सलाहकार श्रीमती कल्पना सहाय तथा आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. जी. एस. तोमर सम्मिलित थे।

संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान भारतीय ज्ञान प्रणाली के विविध आयामों का सम्यक् संकलन एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण करने के उद्देश्य से “भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश” के निर्माण की दिशा में सक्रिय रूप से कार्यरत है। उन्होंने कहा कि यह विश्वकोश भारतीय ज्ञान परंपरा के बहुआयामी स्वरूप को समग्रता में प्रस्तुत करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा।

प्रथम सत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों पर विशिष्ट वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रो. आदेश कुमार ने भारतीय संविधान एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यद्यपि संविधान के अनेक प्रावधान विभिन्न वैश्विक स्रोतों से ग्रहण किए गए हैं, तथापि उसकी

प्रस्तावना तथा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भारतीय चिंतन की मूल भावना का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि पंचशील जैसे सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा से अनुप्राणित हैं।

श्रीमती कल्पना सहाय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी स्तर पर दार्शनिक चेतना से संपृक्त है। भारतीय संस्कृति जीवन को केवल भौतिक दृष्टि से नहीं, अपितु आध्यात्मिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में भी देखती है। डॉ. जी. एस. तोमर ने वैदिक साहित्य एवं आयुर्वेद में निहित वैज्ञानिक ज्ञान की विवेचना करते हुए कहा कि भारतीय परंपरा संपूर्ण मानवता तथा समस्त सृष्टि के कल्याण की कामना करती है। उन्होंने ऋग्वेद एवं आयुर्वेद में वर्णित चिकित्सा संबंधी अवधारणाओं की वैज्ञानिक प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि प्रो. हरिकेश सिंह ने प्रयागराज को ज्ञान एवं आस्था का संगम बताते हुए कहा कि जिस प्रकार यह नगर महाकुंभ के आयोजन का साक्षी बनता है, उसी प्रकार यह कार्यशाला भी एक प्रकार के "ज्ञान-कुंभ" का स्वरूप ग्रहण कर रही है। उन्होंने कहा कि श्रुति एवं स्मृति भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलाधार हैं, जिन पर कालक्रम में विस्मृति की धूल जम गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन स्रोतों का पुनर्पाठ, पुनर्मूल्यांकन एवं पुनर्स्थापन किया जाए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. के. बी. पाण्डेय ने भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्जागरण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह विडम्बना है कि भारत को अपने ही ज्ञान-भंडार की पुनर्खोज करनी पड़ रही है। उन्होंने आयुर्वेद को विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणालियों में से एक बताते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता को वैश्विक स्तर पर व्यापक स्वीकृति प्राप्त हो रही है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी ग्रंथों का गंभीर अध्ययन कर ज्ञान की इस समृद्ध विरासत को आगे बढ़ाएं।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में लगभग 30 प्रतिभागियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। प्रतिभागियों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की समकालीन प्रासंगिकता, उसकी व्यापकता, स्वरूप तथा भावी दिशा से जुड़े विविध प्रश्नों पर विचार प्रस्तुत किए। यह संवादात्मक सत्र अत्यंत सार्थक एवं चिंतनपरक रहा, जिसमें ज्ञान परंपरा के विविध पक्षों पर गंभीर विमर्श संपन्न हुआ।

तृतीय सत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के साहित्यिक स्रोतों को समर्पित रहा। इस सत्र में वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद तथा अन्य प्राचीन एवं आधुनिक ग्रंथों सहित विविध ज्ञान-स्रोतों की पहचान एवं उनके व्यवस्थित अध्ययन पर विचार-विमर्श किया गया। प्रतिभागियों ने "भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश" के निर्माण हेतु संभावित स्रोतों, संदर्भ सामग्री तथा

अनुसंधान की दिशाओं पर विस्तार से चर्चा की तथा इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए।

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान में भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश निर्माण हेतु द्विदिवसीय भारतीय ज्ञान मंथन कार्यशाला संपन्न तथा भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र का उद्घाटन

31 मई 2026 (द्वितीय दिवस)

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज में आयोजित द्विदिवसीय *"भारतीय ज्ञान मंथन कार्यशाला"* का रविवार को सफलतापूर्वक समापन हुआ। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से आए 150 से अधिक शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं विषय-विशेषज्ञों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य प्रस्तावित *भारतीय ज्ञान प्रणाली (BGP) विश्वकोश* के निर्माण हेतु विषयवस्तु, अवधारणाओं तथा प्रविष्टियों की रूपरेखा निर्धारित करना था।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रतिभागियों को चार विषयगत समूहों में विभाजित कर भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश के निर्माण के विविध आयामों पर व्यापक एवं गहन विचार-विमर्श कराया गया। प्रथम समूह को *दर्शन एवं ज्ञान परंपरा*, द्वितीय समूह को *विज्ञान, प्रौद्योगिकी, आयुर्वेद एवं कृषि*, तृतीय समूह को *समाज, शासन एवं अर्थव्यवस्था* तथा चतुर्थ समूह को *भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति एवं शिक्षाशास्त्र* से संबंधित बीज शब्दों एवं अवधारणात्मक प्रविष्टियों के चयन का दायित्व सौंपा गया।

गहन मंथन एवं विमर्श के उपरांत सभी समूहों द्वारा सामूहिक रूप से पाँच हजार से अधिक बीज शब्दों एवं विषयों का चयन किया गया। यही बीज शब्द प्रस्तावित भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश की आधारभूत संरचना का निर्माण करेंगे। इस अवसर पर विशेषज्ञों ने विश्वकोश की संरचना, प्रविष्टियों के स्वरूप, बहुभाषिक प्रस्तुति, संदर्भ प्रणाली तथा डिजिटल ज्ञान-संग्रह के विकास से संबंधित विषयों पर भी विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया।

द्वितीय सत्र में चारों समूहों के प्रतिनिधियों द्वारा अपने-अपने प्रतिवेदन एवं प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं, जिनकी विशेषज्ञों द्वारा सम्यक समीक्षा की गई। इस क्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वकोश के निर्माण की आगामी कार्ययोजना, संपादकीय ढाँचे तथा विभिन्न संस्थानों के सहयोग से इसके प्रभावी क्रियान्वयन की रूपरेखा भी निर्धारित की गई।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने सभी प्रतिभागियों, विद्वानों एवं विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल भाव सह-अस्तित्व, समन्वय, समरसता एवं लोकमंगल है। अतः विश्वकोश हेतु बीज शब्दों एवं अवधारणाओं के चयन में भारतीय चिंतन की इसी समावेशी दृष्टि को केंद्र में रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह विश्वकोश केवल ज्ञान का संकलन मात्र नहीं होगा, बल्कि भारत की बहुआयामी बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं का एक जीवंत, प्रामाणिक एवं स्थायी दस्तावेज सिद्ध होगा।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) माननीय श्री दया शंकर सिंह ने आभासी माध्यम से संस्थान में स्थापित *"भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र"* का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह में प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार सिंह तथा संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अपने उद्बोधन में माननीय मंत्री श्री दया शंकर सिंह ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की गौरवशाली धरोहर नहीं है, अपितु वर्तमान एवं भविष्य के निर्माण की सुदृढ़ आधारशिला भी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह केंद्र राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन, अनुसंधान एवं प्रलेखन का एक अग्रणी केंद्र बनेगा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक अकादमिक विमर्श में प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र की स्थापना एक अभिनव एवं दूरदर्शी पहल है। यह केंद्र परंपरागत ज्ञान एवं आधुनिक अकादमिक अनुसंधान के मध्य एक सशक्त सेतु का कार्य करेगा तथा नई पीढ़ी को भारतीय बौद्धिक परंपराओं से परिचित कराने और उनसे जोड़ने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

कार्यक्रम के दौरान उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के प्रो. ज्ञान प्रकाश यादव द्वारा लिखित पुस्तक *"मानव संसाधन प्रबंधन"* तथा बी.आर.ए. विश्वविद्यालय, बिहार की सहायक प्राध्यापिका डॉ. तुलिका सिंह द्वारा रचित पुस्तक *"The Mind and the Machine: Psychological Impact of Artificial Intelligence"* का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेवा सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान की डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. चंद्रैया गोपानी, डॉ. सुभाष कुमार, डॉ. मानिक कुमार सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी, विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

समापन अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. सुजीत सिंह द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रभावना से ओतप्रोत *'वन्दे मातरम्'* के सुमधुर एवं भावपूर्ण गायन ने समस्त वातावरण को देशभक्ति और सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित कर दिया। इसी प्रेरणादायी एवं गरिमामय वातावरण में द्विदिवसीय भारतीय ज्ञान मंथन कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन हुआ।